

سُورَةُ النَّازِعَاتِ

Surah 79 — An-Naazi'aat (Those who drag forth) · Meccan · 46 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَالنَّزْعَاتِ غَرَقًاۑ

उन (फ़रिश्तों) की कसम

2

وَالنَّشِطَاتِ نَشْطًاۑ

जो (कुफ़ार की रूह) डूब कर सख्ती से खींच लेते हैं

3

وَالسَّابِحَاتِ سَبْحًاۑ

और उनकी कसम जो (मोमिनीन की जान) आसानी से खोल देते हैं

4

فَالسَّابِقَاتِ سَبْقًاۑ

और उनकी कसम जो (आसमान ज़मीन के दरमियान) पैरते फिरते हैं

5

فَالْمُدَبِّرَاتِ أَمْرًاۑ

फिर एक के आगे बढ़ते हैं

6

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُۑ

फिर (दुनिया के) इन्तज़ाम करते हैं (उनकी कसम) कि क़यामत हो कर रहेगी

7

تَتْبَعُهَا الرَّاَدِفَةُۑ

जिस दिन ज़मीन को भूचाल आएगा फिर उसके पीछे और ज़लज़ला आएगा

8

قُلُوبٌ ۚ يَوْمَئِذٍ ۚ وَاجِفَةٌ

उस दिन दिलों को धड़कन होगी

9

أَبْصَرُهَا خُسْفَةٌ ۚ

उनकी आँखें (निदामत से) झुकी हुई होंगी

10

يَقُولُونَ أَءِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ

कुफ़्फ़ार कहते हैं कि क्या हम उलटे पाँव (ज़िन्दगी की तरफ़) फिर लौटेंगे

11

أَءِذَا كُنَّا عِظْمًا ۚ نَّخِرَةً ۚ

क्या जब हम खोखल हड्डियाँ हो जाएँगे

12

قَالُوا ۚ تِلْكَ إِذًا ۚ كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۚ

कहते हैं कि ये लौटना तो बड़ा नुक़सान देह है

13

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ ۚ وَحِدَةٌ ۚ

वह (क़यामत) तो (गोया) बस एक सख्त चीख़ होगी

14

فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ

और लोग शक्र बारगी एक मैदान (हश्र) में मौजूद होंगे

15

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ

(ऐ रसूल) क्या तुम्हारे पास मूसा का किस्सा भी पहुँचा है

16

إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ ۖ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى

जब उनको परवरदिगार ने तूवा के मैदान में पुकारा

17

أَذْهَبَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ

कि फिरऔन के पास जाओ वह सरकश हो गया है

18

فَقُلْ هَلْ لَّكَ إِلَىٰ أَنْ تَزَكَّىٰ

(और उससे) कहो कि क्या तेरी ख्वाहिश है कि (कुफ़्र से) पाक हो जाए

19

وَأَهْدِيكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ

और मैं तुझे तेरे परवरदिगार की राह बता दूँ तो तुझको खौफ (पैदा) हो

20

فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ

गरज़ मूसा ने उसे (असा का बड़ा) मौजिज़ा दिखाया

21

فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ

तो उसने झुठला दिया और न माना

22

ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ

फिर पीठ फेर कर (खिलाफ़ की) तदबीर करने लगा

23

فَحَشَرَ فَنَادَىٰ

फिर (लोगों को) जमा किया और बुलन्द आवाज़ से चिल्लाया

24

فَقَالَ أَنَا ۖ رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ

तो कहने लगा मैं तुम लोगों का सबसे बड़ा परवरदिगार हूँ

25

فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ آلٍ أُخْرَىٰ وَأَوَّلَىٰ

तो खुदा ने उसे दुनिया और आखिरत (दोनों) के अज़ाब में गिरफ्तार किया

26

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً ۖ لِّمَن يَخْشَىٰ

बेशक जो शख्स (खुदा से) डरे उसके लिए इस (किस्से) में इब्रत है

27

ءَأَنْتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۖ بَنَاهَا

भला तुम्हारा पैदा करना ज्यादा मुश्किल है या आसमान का

28

رَفَعَ سَمَكَهَا فَسَوَّاهَا

कि उसी ने उसको बनाया उसकी छत को खूब ऊँचा रखा

29

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا

फिर उसे दुरुस्त किया और उसकी रात को तारीक बनाया और (दिन को) उसकी धूप निकाली

30

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا

और उसके बाद ज़मीन को फैलाया

31

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا

उसी में से उसका पानी और उसका चारा निकाला

32

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا

और पहाड़ों को उसमें गाड़ दिया

33

مَتَّعًا⁹ لَّكُمْ وَلِأَنْعَمِكُمْ

(ये सब सामान) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायो के फ़ायदे के लिए है

34

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ

तो जब बड़ी सख्त मुसीबत (क़यामत) आ मौजूद होगी

35

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَىٰ

जिस दिन इन्सान अपने कामों को कुछ याद करेगा

36

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرَىٰ

और जहन्नुम देखने वालों के सामने ज़ाहिर कर दी जाएगी

37

فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ

तो जिसने (दुनिया में) सर उठाया था

38

وَعَاثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا

और दुनियावी ज़िन्दगी को तरजीह दी थी

39

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ

उसका ठिकाना तो यक़ीनन दोज़ख़ है

40

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ ۖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ

मगर जो शरूख अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरता और जी को नाजायज़ ख्वाहिशों से रोकता रहा

41

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ

तो उसका ठिकाना यक़ीनन बेहश्त है

42

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا

(ऐ रसूल) लोग तुम से क़यामत के बारे में पूछते हैं

43

فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرِهَا

कि उसका कहीं थल बेड़ा भी है

44

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا

तो तुम उसके ज़िक्र से किस फ़िक्र में हो

45

إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرُ مَنِ يخْشَاهَا

उस (के इल्म) की इन्तेहा तुम्हारे परवरदिगार ही तक है तो तुम बस जो उससे डरे उसको डराने वाले हो

46

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا ۖ إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا

जिस दिन वह लोग इसको देखेंगे तो (समझेंगे कि दुनिया में) बस एक शाम या सुबह ठहरे थे